Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का तकनीकी उपयोग के प्रति द्रष्टिकोण का अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार पटेल [1*], प्रो0 सुधीर कुमार वर्मा [2]

शोध छात्र, बी0एड0/एम0एड0 विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय,बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध निर्देशक, बी0एड0/एम0एड0 विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *सुरेन्द्र कुमार पटेल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18480426

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी उपयोग को विशेष महत्व दिया है। इस शोध का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के तकनीकी उपयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह पाया गया कि तकनीकी संसाधनों का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रुचिकर और सुलभ बनाता है। विशेषकर कोविड-*19* जैसी आपात परिस्थितियों में तकनीक ने शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शोध परिणाम दर्शाते हैं कि अधिकांश माध्यमिक स्तर के शिक्षक तकनीकी उपयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं तथा भविष्य में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु तकनीकी एकीकरण आवश्यक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 20-12-2025
- **Accepted:** 28-01-2025
- **Published:** 04-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 17-19
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सुरेन्द्र कुमार पटेल, प्रो. सुधीर कुमार वर्मा. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का तकनीकी उपयोग के प्रति द्रष्टिकोण का अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):17-19.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, माध्यमिक विद्यालय, तकनीकी उपयोगिता,शिक्षक, दृष्टिकोण।

© 2026 सुरेन्द्र कुमार पटेल, प्रो. सुधीर कुमार वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसा संसाधन है जो मानव को जीवन जीने की कला का ज्ञान कराती है। इसीलिए समाज यह मानता है कि मनुष्य के जीवन के लिये शिक्षा एक आवश्यक एवं अनिवार्य कारक है। क्योंकि यदि मनुष्य के पास कुछ भी न हो केवल शिक्षा हो तब भी वह अपना जीवन यापन भली भांति कर सकता है क्योंकि शिक्षा मनुष्य को समाज में किस प्रकार बर्ताब करना है, किस प्रकार सम्बन्धों में मजबूती लानी है किस प्रकार जीवन में आने वाली कठिनाइयों से बचना है आदि के विषय में बताने का काम करती है। अनेक शिक्षाविदों ने शिक्षा को परिभाषित करते हुये कहा है कि -

महात्मा गाँधी **''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम की अभिव्यक्ति है।''**

राधा कृष्णन **''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य के किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।''**

स्वामी विवेकानन्द **''मनुष्य की अन्तःनिर्हित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''**

हरबर्ट स्पेसर **''शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का बाह्य जीवन में समन्वय स्थापित करना है।''**

सोचने वाली बात यह है कि कोरोना जैसी महामारी में शिक्षा व्यवस्था को कैसे सुचारू रूप से चलाया जा सकता है तो बात आती है कि तकनीकी के माध्यम से एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का खाका तैयार किया जा सकता है जो प्रकृतिक आपदाओं कोरोना जैसी महामारियों में भी शिक्षा को व्यवस्थित रूप से संचालित करने में मद्द करेगी। क्योंकि वर्तमान समय के मनावों ने कोरोना की भयावह त्रासदी को देखा है, जब गलियां सूनी थी मौत का ताण्डव चल रहा था। सभी अपने, पराये हो गये थे लोग घर से निकलना नहीं चाहते थे। उन परिस्थितियों में भी शिक्षा व्यवस्था को जिन्दा रखने का काम किसी ने किया तो वह तकनीकी ही थी। इसीलिये अब भविष्य में समस्याओं से निपटने के लिए तकनीकी के सहयोग से शिक्षा की वैकल्पिक व्यवस्था को तैयार करना आवश्यक हो गया है।

तकनीकी

जब शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी संसाधनों की मदद लेता है जिससे शिक्षण और अधिगम दोनों प्रभावित होता है उसे तकनीकी कहते हैं। तकनीकी एक ऐसा विज्ञान है जो मानव जीवन के दैनिक प्रयोग में लाई जाने वाली विधियों का उपयोग करता है जिसका तात्पर्य यह है कि तकनीकी आम जीवन में उपयोग होने वाली विधियों का वैज्ञानिक रूप है।

इस सम्बन्ध में शिक्षाविदों ने अपने विचार निम्न रूप से प्रस्तुत किये हैं-

जकोटा ब्लूमर के अनुसार **''वैज्ञानिक अवस्थाओं तथा प्रविधियों का प्रयोगात्मक रूप ही तकनीकी विज्ञान है।''**

अतः शोधकर्ता इसी विषय पर शोध कार्य करना चाहता है। क्योंकि 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीत में इस विषय पर स्पष्ट कहा गया है। शिक्षा में तकनीकी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाये। जिससे शिक्षा सस्ती और सर्व सुलभ हो सके।

वैसे इससे पहले भी कई शिक्षा नीतियां आयीं जो समय और आवश्यकता के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन करने में सफल रही चाहे वह शिक्षा नीति 1968 हो, 1979 हो या फिर 1986 (संशोधित 1992) सब ने अपने समय और आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन करके बेहतर बनाने का काम किया इसी क्रम में निम्न शिक्षा नीतियां भारत में आयीं।

शिक्षा नीति

शिक्षा नीति से तात्पर्य ऐसी नियमावली से है जो शिक्षा व्यवस्था को एक व्यवस्थित रूप से संचालित करने का प्रावधान करे तथा उसका ढांचा सुनिश्चित करते हुये आगे बढ़ाने का काम करें।

दूसरे शब्दों में शिक्षा नीति से तात्पर्य ऐसे नियमों की श्रृंखला से है जो शिक्षा वयवस्था को ढांचागत रूप प्रदान करते हुये विकास के पथ पर आगे ले जायें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है। जो सभी को उच्च गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने का प्रयास करेगी इस शिक्षा नीति ने बदलते परिवेश एवं आवश्कताओं के साथ शैक्षिक ढांचे में भी परिवर्तन करने का काम किया है। अब पूर्व की शिक्षा संरचना 10+2+3 के स्थान पर 5+3+3+4 लागू किया गया है।

तकनीकी उपयोग के प्रति द्रष्टिकोण

बात यदि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की, किया जाय तो यह कह सकते है कि आज की माध्यमिक शिक्षा में तकनीकी उपयोग के प्रति शिक्षकों का द्रष्टिकोण सकारात्मक और सराहनीय है।

शिक्षकों में तकनीकी उपयोग के प्रति रूचि

वर्तमान समय में शिक्षा में तकनीकी के भरपूर उपयोग का समय है क्योंकि वर्तमान समय में तकनीकी आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है परन्तु यदि हम शिक्षकों की रूचि के विषय में कहे तो यह सच है कि शिक्षक वर्तमान समय में तकनीकी का भरपूर उपयोग कर रहे है। छात्रों में जागरूकता वर्तमान समय के छात्र तो तकनीकी उपयोग में जागरूक एवं सक्षम दिखायी देते है। जिसके कारण उनका तकनीकी के प्रति सकारात्मक द्रष्टिकोण विकसित हुआ है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्तव शिवम्. कोविड-19 में सूचना एवं संचार तकनीकी का शैक्षिक योगदान का अध्ययन. 2022.
2. मिश्रा नन्दलाल. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन. 2018.
3. सिंह अरुण कुमार. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. 2015.
4. कुलश्रेष्ठ एस.पी., सिंघल अनूपमा. शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. 2015.
5. ओड एल.के. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि. 2014.
6. गुप्ता एस.पी. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. 2014.
7. खत्री सकुन्तला. शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी प्रयोग के प्रति व्याख्याताओं की अभिवृत्ति का अध्ययन. 2014.

© 2026 सुरेन्द्र कुमार पटेल, प्रो. सुधीर कुमार वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

8. लाल बिहारी रमन (2013), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्यायें।
9. लाल बिहारी रमन (2011), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त।
10. पाठक पी0डी0 (2008), शिक्षा मनोविज्ञान।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

सुरेन्द्र कुमार पटेल महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश) के बी.एड./एम.एड. विभाग में शोध छात्र हैं। उनकी शोध रुचि शैक्षिक तकनीकी, शिक्षक शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नवाचार और तकनीकी एकीकरण के अध्ययन पर केंद्रित है।

प्रो. सुधीर कुमार वर्मा महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश) के बी.एड./एम.एड. विभाग में शोध निर्देशक हैं। उन्हें शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक तकनीकी तथा शिक्षण-अधिगम नवाचार के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्राप्त है और उन्होंने अनेक शोधार्थियों का सफलतापूर्वक मार्गदर्शन किया है।

© 2026 सुरेन्द्र कुमार पटेल, प्रो. सुधीर कुमार वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/